हबल स्पेस टेलीस्कॉप लांच हुआ

1990 में आज ही अंतरिक्ष में हबल दूरबीन को डिस्कवरी शटल से अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया। इसका नाम खगोलविद एडविन हबल के नाम पर रखा गया। इसके द्वारा रिकॉर्ड की गई तस्वीरों से सटीक अनुमान लगाया जा सका है कि अंतरिक्ष कितनी तेजी से विस्तार कर रहा है।

ब्रिटेन से भारत के बीच पहली नॉन-स्टॉप उड़ान

1929 में आज ही रॉयल एयर फोर्स के स्क्वाड्रन लीडर आर्थर विलियम्स और फ्लाइट लेफ्टीनेंट नॉर्मन एच जेंकिंस ने ब्रिटेन के क्रानवेल से ब्रिटिश भारत के कराची तक पहली नॉन स्टॉप उड़ान भरी। उन्होंने 6,651 किमी की दूरी 50 घंटे 48 मिनट में बिना रुके पूरी की।

वरुण धवन को जन्मदिन मुबारक

हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री के युवा सितारे और हिट फिल्मों की मशीन कहे जाने वाले वरुण धवन का जन्म 1987 में आज ही के दिन मुंबई में फिल्म निर्देशक डेविड धवन के घर हुआ। अब तक छह साल के अपने करियर में वे गंभीर, हास्य, एक्शन समेत तमाम तरह की भूमिकाओं से दर्शकों का मनोरंजन कर चुके हैं। नए अभिनेताओं में वे ऐसे अकेले हैं जिनकी शुरुआती सभी दस फिल्में हिट हुई हैं।

आप भी शुभकामनाएं देना चाहते हैं तो ट्वीट करें Varun Dhawan (@Varun_dvn)

इधर उधर की

सात लाख रुपए के लिए मंगेतर से किया ब्रेकअप

हवाना, एजेंसी : सोशल मीडिया पर इन दिनों एक खबर तेजी से वायरल हो रही है। क्यूबा की एक लड़की ने पैसों के लिए अपने मंगेतर से ब्रेकअप कर लिया। इसके लिए उसे सात लाख रुपये का ऑफर दिया गया था। इस पूरे मामले में सबसे खास बात ये है कि मंगेतर से ब्रेकअप करने के लिए लड़की को ऑफर किसी और ने नहीं बल्कि मंगेतर के माता-पिता ने ही दिया था। लड़की को शुरू से ही मंगेतर के माता-पिता पसंद नहीं करते थे। उन्हें लगता था कि महिला उनके बेटे के लिए अच्छी नहीं है। बावजूद इसके लड़की ने शुरुआत में अपने प्यार के साथ रहना पसंद किया। लेकिन जब लड़की को सात लाख रुपये का दिया गया तो उन्होंने बिना देर किए पैसे लिए और प्रेमी को छोड़ दिया। सोशल मीडिया पर इस खबर के फैलने के बाद लोग तरह-तरह प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। कुछ लोगों ने महिला के फैसले को सही बताया है और तारीफ भी की है।

शोध अनुसंधान

कैंसर से लड़ने में मददगार हो सकती है हल्दी

हल्दी में पाया जाने वाला एक तत्व पेट के कैंसर से बचाव व इसके इलाज में सहायक हो सकता है। ब्राजील की फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ साओ पाउलो और यूनिवर्सिटी ऑफ पारा के शोधकर्ताओं ने इस संबंध में शोध को अंजाम दिया है। प्रोफेसर डेनियल क्वीरोज ने कहा, 'हमने पेट के कैंसर से बचाव और इसके इलाज में कारगर तत्वों पर अध्ययन किया। हल्दी इनमें से एक है।' हल्दी में पाया जाने वाला तत्व करक्यूमिन कैंसर की रोकथाम में भूमिका निभाता है। इसके अलावा कुछ और तत्व भी इस मामले में कारगर पाए गए हैं। इनमें कोलकैल्सिफेरोल, रेसवेराट्रोल (मूलतः अंगूर व रेड वाइन में मिलता है), क्वर्सेटिन (सेब, ब्रोकली एवं प्याज में पाया जाता है), गार्सिनोल, सोडियम ब्यूटीरेट जैसे तत्व शामिल हैं। वैज्ञानिकों ने बताया कि ये तत्व पेट के कैंसर के विकास में भूमिका निभाने वाले जीन की गतिविधियों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। -प्रेट्र

कार्यालय में बैठे रहने वालों को करना चाहिए व्यायाम

कार्यालय में लंबे समय तक बैठे रहने वालों को सेहत से जुड़े खतरे कम करने के लिए रोजाना व्यायाम करना चाहिए। व्यायाम करने से शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है। अध्ययन को अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी के जर्नल में प्रकाशित किया गया है। यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी के प्रोफेसर इमैनुएल ने कहा, 'बैठे रहने के समय को कम करना पर्याप्त नहीं है। ज्यादा देर तक बैठे रहने वालों को दुष्प्रभाव से बचने के लिए आवश्यक रूप से कुछ शारीरिक गतिविधि करनी चाहिए।' अध्ययन में पाया गया कि ज्यादा देर तक बैठे रहने से लोग व्यायाम नहीं करने वालों में असमय मौत का खतरा बढ़ जाता है। - आइएएनएस

मलेरिया से बचाएगा 'मोस्क्यूरिक्स' का टीका

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

अफ्रीका महाद्वीप में मलेरिया से हर साल हजारों लोगों की मौत हो जाती है। इससे बचाव के लिए अब मलावी में प्रयोगात्मक तौर पर एक अभियान शुरू किया गया है। वहां बड़े स्तर पर आधुनिक मलेरिया वैक्सीन के जरिये टीकाकरण किया जा रहा है। पिछले तीन दशकों से वैज्ञानिक इस वैक्सीन को तैयार करने में जुटे हुए थे।

बताया जा रहा है कि इसे बनाने में लगभग 67 अरब रुपये का खर्च आया है। विश्व की सबसे आधुनिक तकनीक से बनाई गई इस वैक्सीन का मलावी की राजधानी लिलोंग्वे में टीकाकरण के बाद केन्या और घाना में भी इसका टीका दिया जाएगा। इसका लक्ष्य दो वर्ष से कम आयु के 1,20,000 बच्चों का टीकाकरण करना और उसके प्रभावों की जांच करना है। पीएटीएच मलेरिया वैक्सीन की पहल पर 'मोस्क्यूरिक्स' नामक यह दवा बनाई गई है। परीक्षण से पहले पांच साल तक इसकी वैज्ञानिक रूप से जांच की गई है और सात देशों के पंद्रह हजार लोगों पर इसका ट्रायल भी किया गया है। ट्रायल के दौरान 40 फीसद मरीजों को मलेरिया से राहत मिली थी। हालांकि यह टीका मच्छर जनित बीमारियों से पूर्ण रूपेण सुरक्षा नहीं देता पर उसके प्रभाव को कम जरूर करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि इस दवा का बड़े स्तर पर टीकाकरण किया गया तो निश्चित तौर पर हजारों लोगों की जान बच सकती है। वर्ष 2015 में इसे पायलट प्रोजेक्ट के लिए चुना गया था।

एआइ से जानें कौन-सी एक्सरसाइज है फायदेमंद

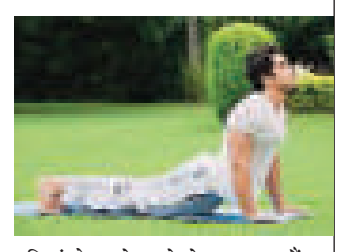

लास एंजिलिस, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने एक ऐसा आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) टूल विकसित किया है जो आपके शरीर के आधार पर बेहतर और कारगर एक्सरसाइज का सुझाव देगा। वैज्ञानिकों ने बताया कि इस एआइ टूल को फिटरेक नाम दिया गया है। अमेरिका के सैन डिएगो में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के वैज्ञानिकों ने बताया कि इसमें 1000 धावकों के लगभग दो लाख 50 हजार एक्सरसाइज के रिकॉर्ड शामिल हैं।

वैज्ञानिकों ने बताया कि इसके माध्यम से उन्होंने एक ऐसा मॉडल बनाया है जो आपके हृदयगति को जांच कर यह पता लगाएगा कि भविष्य में कौन सी एक्सरसाइज बेहतर रहेगी। वर्तमान में जो एक्सरसाइज आप कर रहे हैं कहीं वह आपको नुकसान तो नहीं पहुंचा रही। यदि हां तो उससे बचके के क्या उपाय हैं। फिटरेक यह पता करने में भी सक्षम है कि व्यायाम के दौरान कौन-कौन सी बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। इसके साथ ही यह धावकों के लिए भी बेहतर साबित होगा। दौड़ के दौरान यह हृदयगति की निगरानी करेगा और बताएगा कि कब धीमे होना है और कब स्पीड बढ़ानी है। इससे धावक को थकान कम लगेगी और शरीर के लिए भी फायदेमंद रहेगा।

भूकंप के लिए तैयार नहीं हैं हिमालय के इलाके

आइआइटी मंडी में हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन पर आयोजित कार्यशाला में शोध पत्र जारी करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. टिमोथी ए गोंजाल्विस और अन्य विशेषज्ञ।

जागरण संवाददाता, मंडी

- आइआइटी मंडी में हुई कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने कहा कि हम अपनी पिछली गलतियों से कुछ नहीं सीख रहे

भूकंप एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है जो भारी जनधन की हानि कर जाती है। खासतौर पर पहाड़ी क्षेत्रों में यह सबसे भयावह आपदा बनकर टूटती है और समय-समय पर यहां कम तीव्रता के झटके लोगों को डराते रहते हैं। इस जनधन की हानि को कम करने के लिए यह जरूरी है कि हम इससे निपटने के लिए हमेशा तैयार रहें, लेकिन भारत के संबंध में वैज्ञानिकों का मानना है कि हिमालयी क्षेत्र में 8.5 या इससे अधिक की तीव्रता वाला शक्तिशाली भूकंप कभी भी आ सकता है।

आइआइटी मंडी में 18 से 20 अप्रैल तक 'क्लाइमेट चेंज एंड एक्सट्रीम इवेंट इन हिमालयन रीजन' विषय पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया कि हिमालयी क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन का क्या प्रभाव पड़ रहा है, साथ ही इस दौरान ग्लेशियरों के पिघलने का कारण, लगातार आ रहे भूकंप, वायुमंडल के प्रदूषण, फसलों के अवशेष जलाने से होने वाले प्रदूषण आदि पर भी चर्चा की गई। इस मौके पर खास तौर पर विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों ने चिंता जताते हुए कहा कि हिमालयी क्षेत्र में कभी भी 8.5 और इससे अधिक तीव्रता वाला भूकंप आ सकता है, लेकिन इससे होने वाली जन-धन की हानि को कम करने के लिए हम तैयार नहीं हैं।

आइआइटी रुड़की समेत अन्य शोधार्थियों का एक समूह एक ऐसी प्रणाली विकसित कर रहा है जो भूंकप आने से कुछ देर पहले चेतावनी देगी। लेकिन भारतीय विज्ञान शिक्षा और शोध संस्थान (आइआइएसइआर) के डॉ. सुप्रियो मित्रा ने कहा कि इस तरह की कम समय पर की गई भविष्यवाणी को अच्छा तरीका नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि वह एक ऐसा समाज पंसद करेंगे जो पूरी तरह से तैयार हो। मित्रा ने कहा कि भूकंप विज्ञानी यदि कोई तकनीक विकसित भी कर लें जो भूकंप आने से पहले लोगों को चेतावनी दे कि आप आपने घरों से बाहर आ जाएं, फिर भी हमारे घर तो तबाह हो ही जाएंगे और एक बड़े समुदाय को शरणार्थियों की भांति जीना पड़ेगा। कार्यशाला को संबोधित करते हुए सुप्रियो मित्रा ने कहाकि हमारे पास ऐसे कई विद्वान हैं जो हमें खतरों के बारे में आगाह करें और इंजीनियर उनसे निपटने के लिए ऐसे यंत्र भी बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज विज्ञान इस बात का पता लगा सकता है कि भूकंप किन इलाकों में आ सकता है, लेकिन अभी वह यह नहीं बता सकता कि भूकंप कब आएगा।

कार्यशाला के दौरान घरों और लोगों की सुरक्षा पर निवेश पर भी चर्चा हुई। लेकिन समस्या यह है कि कम आय वर्ग के लोग कैसे अपने भवनों की सुरक्षा करेंगे। आइआइटी कानपुर के डॉ. दुर्गेश सी राय कहते हैं कि हर व्यक्ति का यह अधिकार है कि वह भूकंप से सुरक्षित रहे और सरकार को भी यह सुनिश्चित करना चाहिए। हालांकि उन्होंने सरकारी फंड को इन आपदाओं ने निपटने के लिए बहुत ही कम ही बताया।

अपना शोध पढ़ते हुए राय ने कहा कि 1993 में महाराष्ट्र के लातूर में आए भूकंप से लगभग 9 हजार लोगों की मौत हो गई थी। जांच एजेंसियों ने पाया कि इस जन-धन की हानि का कारण भवनों का भूकंपरोधी न होना है। फिर उसके बाद 2001 में गुजरात के भुज में आए भूकंप से 120 बहुमंजिला इमारतें भी ढह गईं, जो भूकंपरोधी बताई जा रहीं थीं। इस आपदा में 900 लोगों की जानें चली गईं थीं।

ब्लॉक स्तर पर भी मौसम का पूर्वानुमान जारी करेगा विभाग

- अगले साल तक देश के सभी 6,500 ब्लॉक को शामिल करने का लक्ष्य
- किसानों को मौसम के चलते फसलों के नुकसान को कम करने में मदद मिलेगी

नई दिल्ली, प्रेट्र : मौसम पर निर्भर किसानों के लिए अच्छी खबर है। अब जल्द ही उन्हें ब्लॉक स्तर पर मौसम के पूर्वानुमान की जानकारी मिल जाया करेगी। भारतीय मौसम विभाग (आइएमडी) ने मंगलवार को कहा कि अगले साल से देश के सभी 660 जिलों के 6,500 ब्लॉकों के लिए मौसम का पूर्वानुमान जारी करने की प्रक्रिया पर तेजी से काम चल रहा है।

हालांकि, विभाग ने कहा है कि सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य मौसम पूर्वानुमानों की सटीकता को बढ़ाना और कृषि सलाहकार सेवाओं (एएएस) को अधिक उपयोगी और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाना होगा। अभी आइएमडी जिला स्तरीय एडवाइजरी जारी करता है। मौसम पूर्वानुमान और एएएस को ब्लॉक स्तर पर जारी करने के लिए इसने पिछले साल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) से समझौता किया था।

यदि विभाग इस प्रक्रिया को अंतिम रूप दे देता है तो इससे किसानों को सबसे ज्यादा लाभ होगा। समय पर जानकारी मिलने पर वह अपनी फसल को मौसम की मार से बचा सकते हैं। फिक्की के एक कार्यक्रम में आए आइएमडी के उप महानिदेशक एसडी अत्री ने कहा, 'आइसीएआर के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद से बहुत प्रगति हुई है। काम बहुत तेजी से चल रहा है...हम लोगों की भर्ती

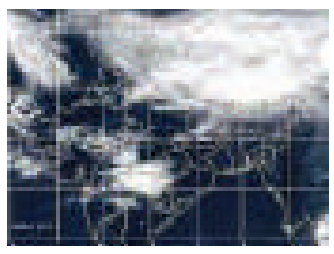

और उन्हें प्रशिक्षित कर रहे हैं।' उन्होंने बताया कि देश के 200 ब्लॉकों में पायलट स्टडी चल रही है। 2020 तक देश के सभी 6,500 को इसमें शामिल करने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि इससे किसानों को मौसम की वजह से फसलों के नुकसान को कम करने में मदद मिलेगी। अत्री ने कहा कि अभी जिला स्तर पर एसएमएस और एमकिसान पोर्टल के जरिए चार करोड़ किसानों को मौसम के पूर्वानुमान की जानकारी मिलती है। अगले साल तक इसे ब्लॉक स्तर पर बढ़ाकर इसमें 9.5 करोड़ किसानों को शामिल करने का लक्ष्य है। उन्होंने निजी क्षेत्र से भी इस क्षेत्र में मदद की अपील की।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान डूबा ऑस्ट्रेलियाई जहाज मिला

- 77 साल पहले जापान की सबमरीन के वार से नष्ट हो गया था जहाज
- घटना में मारे गए लोगों के परिजनों का इंतजार होगा खत्म

सिडनी, एएफपी : द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापानी पनडुब्बी के हमले में डूबे ऑस्ट्रेलियाई जहाज का पता लगा लिया गया है। विक्टोरिया राज्य की सरकार के अधीन 'हेरीटेज विक्टोरिया' एजेंसी के पुरातत्वविदों ने देश के दक्षिण पूर्वी तट के पास इस जहाज के मलबे की खोज की है। उनके अनुसार वह अब भी ठीक-ठाक स्थिति में है।

4 जून, 1942 को एसएस आयरन क्राउन नामक मालवाहक पोत विक्टोरिया राज्य से पास स्थित दक्षिणी तट से जा रहा था। तभी एक जापानी पनडुब्बी से दागे गए टारपीडो की चपेट में आने से वह 60 सेकेंड के भीतर ही डूब गया था। इससे उसपर सवार 43 में से 38 लोगों की मौत हो गई थी। हेरीटेज विक्टोरिया के पुरातत्वविद पीटर हार्वे ने कहा, '77 साल बाद जहाज मिला है। अब उस घटना में मारे गए लोगों के परिजनों का इंतजार खत्म होगा।'

पुरातत्वविदों ने जहाज का पता लगाने के लिए सोनार वेव (पानी के अंदर भेजी जाने वाली तरंगें) की मदद ली थी। फिर ड्रॉप कैमरे से उसकी तस्वीर भी उतारी। उनका कहना है कि इससे जहाज के संरक्षण और प्रबंधन में मदद मिलेगी। बता दें कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जून 1942 से 1943 के बीच में जापान ने ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर 13 पनडुब्बी भेजे थे। उनके हमलों से 22 जहाज डूबे और 194

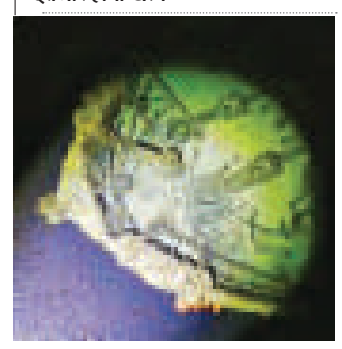

दक्षिण पूर्व ऑस्ट्रेलिया के तट में पड़ा आस्ट्रेलियाई जहाज 'एसएस आयरन क्राउन'। इस तस्वीर को राष्ट्रमंडल वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान संगठन ने मंगलवार को जारी किया।

लोगों की जान गई थी। बता दें कि द्वितीय विश्व युद्ध 1939 से 1945 तक चला था। जिसमें 70 देशों की थल-जल-वायु सेनाएं इस युद्ध में सम्मिलित थीं। इस युद्ध में विश्व मित्र राष्ट्र और धुरी राष्ट्रों में बंटा हुआ था और लगभग 10 करोड़ सैनिकों ने इसमें हिस्सा लिया था।

रेडक्रास महोत्सव में डांस

दक्षिणी थाइलैंड के नरथिवात में वार्षिक रेडक्रास महोत्सव पर खूबसूरत आउटफिट में डांस प्रस्तुत करती एक आर्टिस्ट। यह थाइलैंड के प्रमुख उत्सवों में से एक है। इसमें देशभर के कलाकार अपनी कला और संस्कृति का प्रदर्शन करते हैं। विशाल मेले का भी आयोजन किया जाता है। जिसमें थाई निर्मित स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री भी की जाती है। एएफपी

स्क्रीन शॉट

शाह रुख के रैप सांग पर मोदी ने दी प्रतिक्रिया

पिछले महीने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई एक्टर्स को ट्विटर पर टैग कर कहा था कि वे देश के युवाओं को अपने अंदाज में लोकसभा चुनाव में मतदान करने के लिए प्रेरित करें, ताकि लोकतंत्र को और मजबूती दी जा सके। उन्होंने अपने ट्वीट में शाह रुख खान समेत कई अभिनेताओं को टैग किया था। अब तीन चरणों के मतदान होने के बाद शाह रुख ने एक वीडियो जारी किया है, जिसका शीर्षक 'करो मतदान : इट्स टाइम टू वोट' है। उन्होंने प्रधानमंत्री को वीडियो टैग करते हुए लिखा, 'पीएम साहब ने क्रिएटिविटी के लिए बोला था। मैं थोड़ा लेट हो गया वीडियो बनाने में... आप मत होना वोट करने में! मतदान केवल हमारा अधिकार ही नहीं है, हमारी शक्ति भी है।' पीएम को शाह रुख का यह प्रयास पसंद आया। उन्होंने लिखा, 'शानदार प्रयास! मुझे यकीन है कि भारत के लोग, विशेष रूप से पहली बार मतदान करने वाले आपकी अपील पर ध्यान देंगे और बड़ी संख्या में मतदान करेंगे।' अंगुली में स्याही लगाकर वह माइक पर रैप करते नजर आ रहे हैं। खुद गाए गाने 'सारे के सारे करो मतदान...' में शाह रुख कहते हैं- 'देश आपकी अंगुली के इशारे पर चलता है, आपका मतदान लोकतंत्र की जान।' इस गाने का संगीत तनिष्क बागची ने दिया है, जबकि बोल एब्बी वायरल और रैप मेलो डी ने लिखा है।

करण कपाड़िया जल्द बनाएंगे वेब सीरीज

दिवंगत अभिनेत्री सिंपल कपाड़िया के बेटे करण कपाड़िया फिल्म 'ब्लैंक' से अपने अभिनय की शुरुआत कर रहे हैं। फिल्म में उनके साथ सनी देओल प्रमुख भूमिका में हैं। फिल्म तीन मई को रिलीज होगी, मगर करण आगे की योजनाओं को लेकर अभी से सक्रिय हैं। उन्होंने बताया, 'मैं एक साइंस फिक्शन वेब सीरीज पर करीब डेढ़ साल से काम कर रहा हूं। साइंस फिक्शन और थ्रिलर मेरे पसंदीदा जॉनर हैं। 'ब्लैंक' के कारण अभी उस पर फोकस नहीं कर पा रहा हूं, मगर उस विषय को लेकर मैं बहुत उत्साहित हूं। मुझे एक आइडिया आया था। मैंने उसके बारे में 'ब्लैंक' के निर्देशक बेहजाद खंबाटा और सहलेखक प्रणव को बताया, तो उन्होंने कहा कि इस पर काम करते हैं। मैं उसे लिख रहा हूं। उसमें मैं अभिनय भी कर सकता हूं। जरूरी नहीं कि मैं उसमें सबसे अहम किरदार निभाऊं। मैं उसमें कैमियो भी कर सकता हूं। यह मेरा पसंदीदा प्रोजेक्ट है। लिहाजा उससे स्क्रीन पर किसी न किसी रूप में जुड़ना है। मुझे लगता है कि वह हमारे देश और समय के अनुकूल है। सभी उससे रिलेट करेंगे। मेरा मानना है कि उस विषय को अभी तक हमारे देश में एक्सप्लोर नहीं किया गया है।'

अर्चना पूरन सिंह को ऑफर हुआ था जुम्मा चुम्मा..गाना

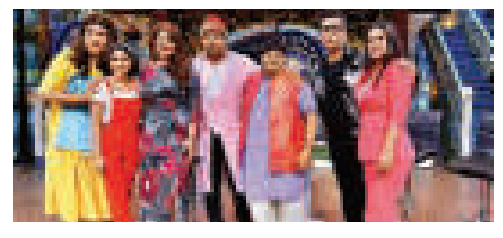

सुपरहिट फिल्म 'हम' का गाना जुम्मा चुम्मा...' किमी काटकर पर फिल्माया गया था। हालांकि असल में यह गाना अर्चना पूरन सिंह को ऑफर हुआ था। यह रहस्योद्घाटन करण जौहर ने 'कपिल शर्मा शो' में किया, जो काजोल के साथ वहां पहुंचे थे। सूत्रों के मुताबिक, करण ने बताया कि 1990 की 'अग्निपथ' में अर्चना को जुम्मा चुम्मा... गाने पर परफॉर्म करना था, जिसमें अमिताभ बच्चन डॉन की भूमिका में थे। अमिताभ ने कहा कि उनके किरदार को देखते हुए यह गाना सूट नहीं करता है। उन्होंने करण के पिता निर्माता यश जौहर से जुम्मा चुम्मा... की जगह अन्य गाने का इस्तेमाल करने को कहा। तब 'अग्निपथ' में अर्चना ने अलीबाबा... गाना किया था। बाद में जुम्मा चुम्मा... गाने को 'हम' में इस्तेमाल किया गया। 'हम' में अमिताभ के अलावा रजनीकांत व गोविंदा प्रमुख भूमिका में थे। 'हम' का डिस्ट्रीब्यूशन धर्मा प्रोडक्शन ने किया था। शो का प्रसारण शनिवार को होगा। उसमें करण कई और दिलचस्प राज खोलते नजर आएंगे।

'छपाक' में दीपिका के लुक से प्रभावित हुईं भूमि पेडणेकर

दीपिका पादुकोण और भूमि पेडणेकर में कुछ कॉमन है। वह यह कि इन दोनों अभिनेत्रियों ने क्रमशः 'छपाक' और 'सांड की आंख' में किरदारों के लिए अपना रूपांतरण किया है। 'छपाक' में दीपिका एसिड अटैक सरवाइवर की भूमिका निभा रही हैं, वहीं 'सांड की आंख' में भूमि दुनिया के सबसे बुजुर्ग शार्पशूटर का रोल कर रही हैं। दोनों अभिनेत्रियों ने स्क्रीन पर किरदारों के मुताबिक दिखने के लिए प्रॉस्थेटिक्स का इस्तेमाल किया है। उनके पहले लुक को देखकर सभी दंग रह गए थे। दीपिका द्वारा 'छपाक' जैसी प्रासंगिक और ज्वलंत सामाजिक मुद्दे पर फिल्म करने की भूमि कायल हैं। भूमि ने कहा, 'फिल्म 'छपाक' का पहला लुक शानदार था। दीपिका का रूपांतरण देखना अद्भुत था। इंडस्ट्री में अभिनेत्रियों के लिए बेहतरीन दौर चल रहा है। अपरंपरागत विषय और मुद्दे आगे आ रहे हैं और महिलाओं के लिए भूमिकाएं तैयार हो रही हैं।' 'सांड की आंख' के लुक को मिली प्रतिक्रिया से भूमि खासी उत्साहित हैं। वह कहती हैं, 'मैंने इस फिल्म के लिए अपना सब कुछ दिया है। मैंने रोजाना तीन घंटे मेकअप के लिए दिए।' भूमि ने फिल्म 'दम लगा के हईशा' के लिए वजन बढ़ाया था। फिल्म 'सोन चिरैया' में वह डकैत बनी थीं। वह कहती हैं, 'मुझे भूमिकाओं के लिए खुद को बदलने में मजा आता है।'

फैलेगी हरियाली

बायो एथेनॉल के लिए बड़ी मात्रा में पड़ेगी कच्चे माल जरूरत, आपूर्ति के लिए नदियों के किनारों पर किया जाएगा सघन पौधरोपण

जैव ऊर्जा का स्रोत बनेंगे नदियों के किनारे

गिरीश पांडेय, लखनऊ

उत्तर प्रदेश की नदियां जैव ऊर्जा का स्रोत बनने जा रही हैं। आने वाले समय में राज्य में बायो एथेनॉल बनाने वाली कई कंपनियां लगनी हैं। इनके लिए बड़ी मात्रा में ऐसे पौधों की जरूरत पड़ेगी जिनसे आसानी से बायो एथेनॉल बनाया जा सके। राज्य सरकार की योजना नदियों के तटों के आसपास और प्रस्तावित बहुउद्देशीय तालाबों के किनारे पौधे लगाने की है।

उल्लेखनीय है कि बायो एथेनॉल बनाने के लिए इंडियन ऑयल कारपोरेशन की गोरखपुर और बदायूं में 850-850 करोड़ रुपये की लागत से दो इकाइयां प्रस्तावित हैं। सहारनपुर और बिजनौर में भी दो इकाइयों पर काम शुरू कर दिया गया है। इनकी लागत क्रमशः 400-400 करोड़ रुपये है। सीतापुर में 50 करोड़ रुपये की रुपये की लागत से एक इकाई लगनी है। इसके अलावा उप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने ईंट भट्ठों के लिए 20 फीसद बायोकोल अनिवार्य कर दिया है। लिहाजा आने वाले समय में जैव ऊर्जा के लिए बड़ी मात्रा में कृषि अपशिष्ट के साथ फसलों और पौधों की उन प्रजातियों (एलीफेंट ग्रास, बांस और लेमन ग्रास आदि) की मांग बढ़ेगी जिनको आसानी से बायो एथनॉल और बायोकोल में

बदला जा सके। नदियों और इनके तट पर प्रस्तावित बहुउद्देशीय तालाबों के किनारे ऐसी प्रजातियों के सघन पौधरोपण से इसका हल निकल सकता है।

इससे संबंधित इकाइयों के लिए कच्चा माल तो मिलेगा ही, कई अन्य लाभ भी होंगे। मसलन बाढ़ के दौरान होने वाली कटान की समस्या का स्थायी हल मिलेगा। प्राकृतिक तरीके से नदियों का प्रदूषण कम होगा। स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। जिन किसानों के खेत नदियों के तट में हैं उनकी आय बढ़ेगी। पौधरोपण से लेकर उसकी कटाई, ग्रेडिंग और स्थानीय औद्योगिक इकाई तक उसे ले जाने में स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। पौध होने पर खेत से होने वाला अवैध खनन भी काफी हद तक रुक जाएगा। सरकार की चिंता एनजीटी के तमाम आदेश भी हैं, जिन पर अमल होना है।

ऊर्जा के लिए आइआइटी रुड़की और टेरी ने मिलाया हाथ

जागरण संवाददाता, रुड़की : ऊर्जा और सतत विकास की चुनौतियों को दूर करने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) रुड़की और द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) नई दिल्ली ने एक करार पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत दोनसंस्थान आपसी अभिरुचि के क्षेत्रों में सहयोग करेंगे। आइआइटी रुड़की और टेरी नई दिल्ली अक्षय ऊर्जा, जल प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, खाद्य, पर्यावरण और परिवहन के स्थाई साधन जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इस सहमति करार से क्षमता विकास के कार्य होंगे। साथ ही ऊर्जा सक्षमता, अक्षय ऊर्जा, हरित भवन, महानगर विकास एवं परिवहन में स्थिरता, हवा की गुणवत्ता, भूमि का स्थायित्वपूर्ण उपयोग, कचरा प्रबंधन, जलवायु विज्ञान एवं नीति, संसाधन सक्षमता और सुरक्षा जैसे अहम क्षेत्रों में सार्वजनिक नीति और सरकारी प्रयासों पर केंद्रित साझा प्रयास किए जाएंगे।